कक्षा – छठी

1 साथी हाथ बढ़ाना

साथी हाथ बढ़ाना

एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना.

साथी हाथ बढ़ाना.

हम मेहनतवालों ने जब भी, मिलकर कदम बढ़ाया,

सागर में रस्ता छोड़ा, परबत ने सीस झुकाया,

फौलादी हैं सीने अपने, फौलादी हैं बाँहें,

हम चाहे तो चट्टानों में पैदा कर दे राहें,

साथी हाथ बढ़ाना.

मेहनत अपने लेख की रेखा, मेहनत से क्या डरना,

कल गैरों की खातिर की, आज अपनी खातिर करना,

अपना दुख भी एक है साथी, अपना सुख भी एक,

अपनी मंजिल सच की मंजिल, अपना रास्ता नेक,

साथी हाथ बढ़ाना.

एक से एक मिले तो कतरा, बन जाता है दरिया,

एक से एक मिले तो जर्रा, बन जाता है सेहरा,

एक से एक मिले तो राई, बन सकती है परबत,

एक से एक मिले तो इंसाँ, बस में कर ले किस्मत,

साथी हाथ बढ़ाना.

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें-

(क) कवि मिलकर बोझ उठाने की बात क्यों कर रहा है?

(ख) चट्टानों में राहें पैदा करने के लिए क्या करना होगा?

(ग) मेहनत से क्यों नहीं डरना चाहिए?

(घ) एक से एक जर्रा मिले तो क्या बन जाता है?

(ङ) एक से एक मिले तो राई क्या बन सकती है?

उत्तर

(क) बोझ उठाने में आसानी होगी

एक दूसरे की सहायता कर पाएंगे

(ख़) हमें मिलकर कदम बढ़ाना होगा

हमें मिलजुल कर प्रयास करना होगा

हमें मिलजुलकर परिश्रम करना होगा

ग) मेहनत लेख की रेखा है

मेहनत से किस्मत बदलता है बदला जा सकता है

(घ) सेहरा

( ) पर्वत